अध्याय 10

हमारे बाजार

एक अकेला व्यक्ति अपने जीवन की समस्त आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर सकता। सभ्यता के प्रारम्भ से ही मनुष्य एक दूसरे पर निर्भर रहा है, हालाँकि इसके स्वरूप में परिवर्तन एवं विस्तार होता रहा है। प्रारम्भ में मनुष्य की आवश्यकताएँ बहुत कम थीं। वह अपने आस–पास के लोगों से ही अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर लेता था। वह दूसरों को उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ देता था और बदले में अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त कर लेता था, जैसे कि किसान अपने खेत में पैदा अनाज के बदले अपनी आवश्यकता का सामान प्राप्त करता था। वह अनाज के बदले में जुलाहे से कपड़ा, लुहार से औजार तथा कुम्हार से बर्तन प्राप्त करता था। इस प्रकार वस्तु के बदले वस्तु देकर एक दूसरे की आवश्यकताएँ पूरी की जाती थीं। यह प्रणाली 'वस्तु–विनिमय' कहलाती है। एक ही स्थान पर रहने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं को इसी प्रकार से पूरा करते थे।

वस्तु विनिमय

समय गुजरने के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं और उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई–नई वस्तुओं का निर्माण होने लगा। वस्तुओं के निर्माण की नई–नई विधियाँ खोजी गईं और जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ बड़ी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया जाने लगा। कृषि एवं परम्परागत वस्तुओं के उत्पादन के साथ–साथ लघु व कुटीर उद्योगों में आवश्यकता की अनेक वस्तुओं का उत्पादन होने लगा। अब वस्तु के बदले वस्तु देने की प्रणाली के द्वारा लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाईयाँ आने लगीं। धीरे–धीरे लेन–देन की एक नई प्रणाली विकसित हुई। मुद्रा के विकास के साथ ही मुद्रा के बदले वस्तुओं के लेने–देने की सुविधापूर्ण प्रणाली प्रचलित हुई। जब वस्तु के मूल्य के रूप में वस्तु न दी जाकर मुद्रा दी जाती है, तो इसे 'मुद्रा–विनिमय' कहते हैं।

मुद्रा–विनिमय

आधुनिक युग मशीनों का युग है। बड़े–बड़े कारखानों में लगे मजदूर हमारी आवश्यकता की हजारों तरह की वस्तुएँ तैयार करते हैं। आज व्यक्ति केवल अपने गाँव, शहर या देश की ही नहीं बल्कि विदेशों में बनी वस्तुओं का भी उपयोग करने लगा है। यह वस्तु–विनिमय प्रणाली में सम्भव नहीं था, परन्तु मुद्रा–विनिमय प्रणाली ने इसे सम्भव बना दिया है।

गतिविधि :

आपके गाँव या शहर में कही–कहीं आज भी वस्तु विनिमय की गतिविधियाँ देखी जा सकती है। उनकी एक सूची बनाइए।

बाजार

हम बाजार जाते हैं और बाजार से अपनी आवश्यकता की बहुत–सी चीजें खरीदते हैं, जैसे– सब्जियाँ, साबुन, दंत–मंजन, मसाले, ब्रेड, बिस्किट, चावल, दाल, कपड़े, किताबें, कॉपियाँ आदि। हम जो कुछ खरीदते हैं, यदि उन सब की सूची बनाई जाए, तो वह काफी लंबी होगी। बाजार भी कई प्रकार के होते हैं, जहाँ कि हम अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को खरीदने के लिए जाते हैं, जैसे– हमारे पड़ोस की गुमटी, मोहल्ले की दुकान, साप्ताहिक हाट (बाजार), बड़े–बड़े शॉपिंग कॉम्पलेक्स और शॉपिंग मॉल आदि।

आइए! हम बाजार के इन विभिन्न स्वरूपों की चर्चा करें–

1. मोहल्ले की दुकानें

बहुत–सी दुकानें हमारे मोहल्ले में होती हैं, जो हमें कई तरह की सेवाएँ और सामान उपलब्ध करवाती हैं। हम पास की डेयरी से दूध, किराना व्यापारी से तेल–मसाले व अन्य खाद्य पदार्थ तथा स्टेशनरी के व्यापारी से कागज–पैन या फिर दवाइयों की दुकान से दवाइयाँ खरीदते हैं। नाई की दुकान पर अपने बाल कटवाते हैं और ड्राई–क्लिनर से अपने वस्त्र धुलवाते व इस्त्री करवाते हैं। नाई व ड्राई–क्लीनर हमें अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। इस तरह की दुकानें सामान्यतः पक्की और स्थायी होती हैं, जबकि सड़क किनारे फुटपाथ पर सब्जियों के कुछ छोटे दुकानदार, फल–विक्रेता और कुछ गाड़ी मैकेनिक आदि भी दिखाई देते हैं। ये मोहल्ले की दुकानें कई अर्थों में बहुत उपयोगी होती हैं, वे हमारे घरों के करीब होती हैं, अतः हम सप्ताह के किसी भी दिन और किसी भी समय इन दुकानों पर जा सकते हैं।

2. साप्ताहिक बाजार

साप्ताहिक बाजार का यह नाम इसीलिए पड़ा क्योंकि यह बाजार सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन लगता है। इस तरह के बाजार में रोज खुलने वाली पक्की दुकानें नहीं होती हैं। किसी एक निश्चित स्थान पर बहुत से व्यापारी एक निश्चित दिन खुले में ही दुकाने लगाते हैं और शाम होने पर उन्हें समेट लेते हैं। अगले दिन वे अपनी दुकानें किसी और जगह लगाते हैं। ऐसे बाजारों को हाट बाजार भी कहा जाता है। साप्ताहिक बाजारों में रोजमर्रा की जरूरतों की बहुत–सी चीजें सस्ते दामों पर मिल जाती हैं। ऐसा इसलिए कि इन बाजारों में एक ही तरह के सामानों की कई दुकानें होती हैं, जिससे उनमें आपस में प्रतियोगिता होती हैं, अतः खरीदारों के पास यह

साप्ताहिक हाट बाजार

अवसर भी होता है कि वे मोल–तोल करके भाव कम करवा सकें। साथ ही इन्हें अपनी दुकानों का किराया, बिजली का बिल, सरकारी शुल्क, कर्मचारी की तनख्वाह आदि का खर्च भी नहीं करना पड़ता है। लोग अक्सर इन बाजारों में जाना पसंद करते हैं।

3. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और मॉल

बड़े शहरों में कुछ इस प्रकार के बाजार भी होते है, जहाँ एक ही छत के नीचे अनेक वस्तुओं की अनेक दुकानें होती हैं। इन्हें लोग शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के नाम से जानते हैं। कुछ शहरी इलाकों में आपको बहुमंजिला वातानुकूलित दुकानें भी देखने को मिलेंगी, जिनकी अलग–अलग मंजिलों पर अलग–अलग तरह की वस्तुएँ मिलती हैं। इन्हें शॉपिंग मॉल कहा जाता है।

शॉपिंग मॉल

4. विशेष बाजार

शहर में कई स्थानों पर एक वस्तु विशेष के लिये विशेष बाजार भी होते हैं, जैसे– कपड़ा बाजार, लोहा बाजार, अनाज बाजार आदि। इन बाजारों में एक ही प्रकार की वस्तु की कई दुकानें होती हैं।

गतिविधि :

विभिन्न प्रकार के बाजारों की शिक्षक से जानकारी प्राप्त करके उन पर कक्षा में चर्चा करें।

क्या आपने कभी सोचा है कि आपके मोहल्ले के दुकानदार अपनी दुकानों के लिए सामान कहाँ से लेकर आते हैं?

थोक व्यापारी व फुटकर व्यापारी

वस्तुओं अथवा सामानों का उत्पादन खेतों, घरेलु उद्योगों और कारखानों में होता है, लेकिन हम ये सामान इन उत्पादकों से सामान्यतः सीधे–सीधे नहीं खरीदते हैं। वे लोग जो वस्तु के उत्पादक और वस्तु के उपभोक्ता के बीच में होते हैं, उन्हें व्यापारी कहा जाता है। व्यापारी दो प्रकार के होते हैं –

1. वे व्यापारी जो उत्पादक से बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेते हैं और फिर इन्हें वे छोटे व्यापरियों को बेच देते हैं, ये थोक व्यापारी कहलाते हैं। जैसे– सब्जियों का थोक व्यापारी 10–12 किलो सब्जियाँ नहीं खरीदता है, बल्कि वह बड़ी मात्रा में 300–400 किलो तक सब्जियाँ खरीद लेता है। वह इन्हें गली–मोहल्ले के छोटे सब्जी विक्रेताओं को बेच देता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों व्यापारी ही होते हैं।

2. वह व्यापारी जो अंततः वस्तुएँ हम उपभोक्ताओं को बेचता है, वह खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है। यह वही दुकानदार होता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाजार या फिर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में सामान बेचता मिलता है।

गतिविधि :
खेतों , घरेलू उद्योगों और कारखानों में बनने वाली पाँच–पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए।

बैंकिंग प्रणाली

वर्तमान युग में बैंकिंग प्रणाली हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी है। सामान्यतः हमारे निकट में किसी बैंक की शाखा अथवा पोस्ट–ऑफिस होता है। बैंकों का मुख्य कार्य व्यक्तियों व संस्थाओं से नकद जमाएँ स्वीकार करना तथा जरूरतमंद व्यक्तियों और संस्थाओं को ऋण उपलब्ध कराना है। कोई भी व्यक्ति बैंक या पोस्ट–ऑफिस में जाकर अपना खाता खुलवा सकता है। व्यापारिक और अन्य संस्थाएँ भी अपना खाता खुलवा सकते हैं। खाते विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे– बचत खाता, चालू खाता, स्थायी जमा खाता आदि। अपनी आवश्यकता के अनुसार किसी भी प्रकार का खाता खुलवाया जा सकता है।

बैंक का दृश्य

सभी बैंक 'भारतीय रिजर्व बैंक' के निर्देशन एवं नियंत्रण में कार्य करते हैं। बैंकिंग प्रणाली ने धन के लेन–देन को आसान और सुरक्षित बना दिया है। कितनी भी बड़ी राशि का भुगतान या स्थानान्तरण चैक, बैंक–ड्राफ्ट, इंटरनेट बैंकिंग आदि का उपयोग कर के आसानी से और शीघ्रता से किया जा सकता है। हम ऑटोमेटिक टेलर मशीन (ए.टी.एम.) के द्वारा अपने खाते से धन सरलता से निकाल सकते हैं। हम अपनी बचत का धन अपने खाते में जमा करवा सकते हैं। यहाँ हमारा धन सुरक्षित रहता है, साथ ही उस पर ब्याज भी मिलता हैं। हमारी इस प्रकार की छोटी–छोटी बचतें बैंक में इकट्ठा होकर विशाल धनराशि बन जाती है। इस राशि को बैंक अपना रोजगार स्थापित करने के इच्छुक लोगों के साथ ही उद्योगों और व्यावसायिक संस्थाओं को उधार दे देता है। इस धन का उपयोग कई विकास कार्यों में किया जाता है। इस प्रकार बैंक रोजगार और उद्योग–व्यवसायों के लिए ऋण दे कर विकास कार्यों में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक तरफ जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग सेवाओं को सर्व सुलभ किया है, वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग इस तकनीकी का दुरूपयोग करके बैंक खाता–धारकों को ठग लेते हैं। अतः इंटरनेट बैंकिंग एवं ए.टी.एम. मशीन का उपयोग किसी दूसरे व्यक्ति के उपस्थिति में नहीं करें। अपने पासवर्ड / पिन नम्बर किसी भी व्यक्ति को नहीं बताएँ।

ए.टी.एम. मशीन

गतिविधि :

अपने शिक्षक / अभिभावक की मदद से बैंक या पोस्ट ऑफिस में बचत खाता खुलवाने की प्रक्रिया को समझें और अपना बचत खाता खुलवाएँ।

शब्दावली

परम्परागत : परम्परा से चले आ रहे रीति–रिवाज या सिद्धान्त।

लघु–उद्योग : छोटा उद्योग जिसमें लगभग 20 आदमी तक लगे हों।

कुटीर–उद्योग : घरेलु उद्योग जो परिवार के सदस्यों के सहयोग से चलता है।

थोक व्यापारी : बड़ी मात्रा में माल खरीदने–बेचने वाला व्यापारी

फुटकर या खुदरा व्यापारी : थोड़ी मात्रा में माल खरीदने–बेचने वाला व्यापारी

व्यावसायिक : व्यवसाय से संबंधित

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –

(i) जो व्यापारी बड़ी मात्रा में सामान खरीदकर छोटे व्यापारियों को बेचते हैं, कहलाते हैं –

(अ) थोक व्यापारी (ब) खुदरा व्यापारी

(स) हाट व्यापारी (द) इनमें से कोई नहीं ( )

(ii) हम अपना बचत खाता खुलवा सकते हैं –

(अ) बैंक में (ब) पोस्ट–ऑफिस में

(स) बैंक व पोस्ट ऑफिस दोनों में (द) इनमें से किसी में भी नहीं ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(i) साप्ताहिक बाजारों को ..... भी कहते हैं।

(ii) हम ..... मशीन का प्रयोग करके अपने खाते से धन सरलता से निकाल सकते हैं।

(iii) सभी बैंक.....के निर्देशन एवं नियंत्रण में कार्य करते हैं।

3. वस्तु–विनिमय किसे कहते हैं ?

4. मुद्रा–विनिमय किसे कहते हैं ?

5. हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ कौन–कौनसे बाजारों से प्राप्त होती हैं ?

6. व्यापारी मुख्य रूप से कितने प्रकार के होते हैं ?

7. हम बैंक में किस तरह के खाते खोल सकते हैं ?

8. बैंक हमारे लिए किस प्रकार से उपयोगी होते हैं ?